This is a draft only

श्री राम, जय राम, जय जय राम
राम, श्री राम, श्री राम, जय जय राम
राम, श्री राम, श्री राम, जय जय राम

मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी
महाबीर बिनबउं हनुमाना, राम जासु जस आप बखाना
पवन तनय बल पवन समाना, बुधि बिबेक बिग्यान निधाना
सुनु कपि तोहि समान उपकारी, नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी
सो सब तव प्रताप रघुराई, नाथ न कछू मोरि प्रभुताई
यह संबाद जासु उर आवा, रघुपति चरन भगति सोई पावा
हनूमान सम नहिं बड़भागी, नहिं कोउ रामचरन अनुरागी

जय जय गिरिबरराज किसोरी, जय महेस मुख चन्द चकोरी
जय गजबदन षडानन माता, जगत जननि दामिनि दुति गाता

Shiva

जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी, सो न पाव मुनि भगति हमारी
सिव द्रोही मम भगत कहावा, सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा
संकर बिमुख भगति चह मोरी, सो नारकी मूढ़ मति थोरी
संकर भजन बिना नर, भगति न पावइ मोरि
हरि हर निंदा सुनइ जो काना, होइ पाप गोघात समाना

satsang

बिनु सतसंग बिबेक न होई, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई
बड़े भाग पाइब सतसंगा, बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा
very fortunate ones get satsang that effortlessly ends cycles of transmigration
तबहिं होइ सब संसय भंगा, जब बहु काल करिअ सतसंगा
दोहा-- बिनु सतसंग न हरि कथा, तेहि बिनु मोह न भाग
मोह गएँ बिनु राम पद, होइ न दृढ़ अनुराग
अस बिचारि जोइ कर सतसंगा, राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई, पारस परस कुघात सुहाई
हानि कुसंग सुसंगति लाहू, लोकहुं बेद बिदित सब काहू
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा, कीचहिं मिलइ नीच जल संगा
बिधिबस सुजन कुसंगत परहीं, फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं
बरु भल बास नरक कर ताता, दुष्ट संग जनि देइ बिधाता
bad company is worst than living in hell

बिनसइ उपजइ ग्यान, जिमि पाइ कुसंग सुसंग
सुमति कुमति सब कें उर रहहिं, नाथ पुरान निगम अस कहहीं
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना, जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना

grace

बोले बिहसि महेस तब, ग्यानी मूढ़ न कोई
जेहि जस रघुपति करहिं जब, सो तस तेहि छन होई
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई, जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई
तुम्हरिहि कृपा तुम्हहि रधुन्दन, जानहिं भगत भगत उर चन्दन
सब गुन साधन तें नहिं होई, तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती, करहिं सदा सेवक पर प्रीती

रामहि केवल प्रेम पियारा, जानि लेउ जो जाननिहारा

निर्मल मन जन सो मोहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा
सनमुख होइ जीव मोहि जबहि, जन्म कोटि अघ नासहिं तबहिं
सोइ गुन सागर ईस, राम कृपा जा पर करहु

surrender/bhakti

हैं योगेश्वर कृष्ण मुरारी, और जहां अर्जुन धनुधारी ।
वैभव विजय नीति श्री सारे, ध्रुव हैं मत में वहां हमारे ॥१८.७८॥
जब जब होइ धरम कै हानी, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा, हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा
नट मरकट इव सबहि नचावत, रामु खगेस बेद अस गावत

sick useless useless

सरुज सरीर बादि बहु भोगा, बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा
दोहा – अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहउँ निरबान
जनम जनम रति राम पद, यह बरदान न आन

moha ka bhram goes away only after vivek and then love of God developes

होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा, तब रधुनाथ चरन अनुरागा
सखा परम परमारथु एहू, मन क्रम बचन राम पद नेहू
जिन्ह कें रही भावना जैसी, प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू, सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू

तव पद पंकज प्रीति निरंतर, सब साधन क यह फल सुंदर
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही, बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हही
उमा राम सुभाउ जेहिं जाना, ताहि भजनु तजि भाव न आना

प्रेम भगति जल बिनु रघुराई, अभिअंतर मल कबहुँ न जाई

भगति हीन गुन सब सुख ऐसे, लवन बिना बहु बिंजन जैसे

तब लगि हृदयँ बसत खल नाना, लोभ मोह मच्छर मद माना
तब लगि बसति जीव मन माहीं, जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं
जब लगि उर न बसत रघुनाथा, धरें चाप सायक कटि भाथा
bow arrow, quiver (tarkash) at back
समदरसी इच्छा कछु नाहीं, हरष सोक भय नहिं मन माहीं
अस सज्जन मम उर बस कैसें, लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें
त्याग सभी ही धर्मों का कर, केवल मेरी शरण ग्रहण कर
सब पापों से मुक्ति विसर्जन, करूं, शोक मत कर तू, अर्जुन

मोर दास कहाइ नर आसा, करइ तौ कहहु कहा बिस्वासा
his faith is week if my devoteee expects anything from people.

Maya

मोह न अंध कीन्ह केहि केही, को जग काम नचाव न जेही
तृष्णाँ केहि न कीन्ह बौराहा, केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा
बिनु संतोष न काम नसाहीं, काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा, थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा
kaam
क्रोध मनोज लोभ मद माया, छूटहिं सकल राम की दाया
अतिसय प्रबल देव तव माया, छूटइ राम करहु जौं दाया
भूमि परत भा ढाबर पानी, जनु जीवहि माया लपटानी
दोहा -- सुनहु तात माया कृत, गुन अरु दोष अनेक
गुन यह उभय न देखिअहिं देखिअ सो अबिबेक
प्रभु माया बलवंत भवानी, जाहि न मोह कवन अस ग्यानी
दोहा-- सिव बिरंचि कहुँ मोहइ, को है बपुरा आन
अस जियँ जानि भजहिं मुनि, माया पति भगवान
चिन्ता साँपिनि को नहिं खाया, को जग जाहि न ब्यापी माया
दोहा-- ब्यापि रहेउ संसार महुँ, माया कटक प्रचंड
सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाषंड
छूट न राम कृपा बिनु, नाथ कहउँ पद रोपि
माया बस्य जीव अभिमानी, ईस बस्य माया गुन खानी
उभय बीच सिय सोहति कैसें, ब्रह्म जीव बिच माया जैसें

मैं अरु मोर तोर तैं माया, जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया
दोहा -- माया ईस न आप कहुँ, जान कहिअ सो जीव
बंध मोच्छ प्रद सर्वपर, माया प्रेरक सीव
the one who does not know maya, ishvar and itself is Jiva
the one who gives bondage, liberation, and has the power of maya is ishvar.
प्रेम भगति जल बिनु रघुराई, अभिअंतर मल कबहुँ न जाई
भूमि परत भा ढाबर पानी, जनु जीवहि माया लपटानी

Gyan/gyani

छीजहिं निसिचर दिनु अरु राती, निज मुख कहें सुकृत जेहि भाँति
merit thins when one makes display of it
secretly
जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ, फलइ तबहिं जब करिअ दुराऊ
कादर मन कहुँ एक अधारा, दैव दैव आलसी पुकारा
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी, परमारथी प्रपंच वियोगी
जानिअ तबहिं जीव जग जागा, जब सब बिषय बिलास बिरागा 2.92.2
one who is parmarthi and free from maya and vairagi is considered awake and gyani
useless cloth w/o useless vairag w/o
बादि बसन बिनु भूषन भारू, बादि बिरति बिनु ब्रह्मबिचारू
ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं, देख ब्रह्म समान सब माहीं
one who has no maan etc. defects and sees god in all is a gyani

देखिअहिं रूप नाम आधीना, रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना
बिनसइ उपजइ ग्यान, जिमि पाइ कुसंग सुसंग
राम कृपा बिनु सुनु खगराई, जानि न जाइ राम प्रभुताई
जानें बिनु न होइ परतीती, बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती
प्रीती बिना नहिं भगति दिढ़ाई, जिमि खगपति जल कै चिकनाई
ईस्वर अंस जीव अबिनासी, चेतन अमल सहज सुख रासी
सिया राममय सब जग जानी, करहूं प्रनाम जोरि जुग पानी
छिति जल पावक गगन समीरा, पंच रचित अति अधम सरीरा
अति संघरषन जौं कर कोई, अनल प्रगट चंदन ते होई
उमा जे राम चरन रत, बिगत काम मद क्रोध
निज प्रभुमय देखहिं जगत, केहि सन करहिं बिरोध
अनुचित उचित काजु किछु होऊ, समुझि करिआ भल कह सबु कोऊ

fate

करम प्रधान बिस्व करि राखा, जो जस करइ सो तस फल चाखा
होइहि सोई जो राम रचि राखा, को करि तर्क बढ़ावै साखा

हानि लाभु जीवनु मरनु जसु, अपजसु बिधि हाथ
अस विचार केहि देइआ दोसू, ब्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू
सिय रधुबीर कि कानन जोगू, करम प्रधान सत्य कह लोगू
अस बिचारि नहिं कीजिअ रोसू, काहुहि बादि न देइअ दोसू
तब अधिकार मात्र करमों में, कभी नहीं कुछ किन्तु फलों में
तदपि बिरोध मान जहं कोई, तहां गएं कल्यानु न होई
भांति अनेक संभु समुझावा, भावी बस न ग्यानु उर आवा
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता, निज कृत करम भोग सबु भ्राता
जनम मरन सब दुख सुख भोगा, हानि लाभु प्रिय मिलन वियोगा
काल करम बस होहिं गोसाईं, बरबस राति दिवस की नाईं
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहिं, दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं
जनि मानहु हियँ हानि गलानी, काल करम गति अघटित जानी

Kaliyug

हरइ सिष्य धन सोक न हरई, सो गुर घोर नरक महुँ परइ
vairaag
ममता रत सन ग्यान कहानी, अति लोभी सन बिरति बखानी
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा, ऊसर बीज बएँ फल जथा
reed
सो-- फूलइ फरइ न बेत, जदपि सुधा बरषहिं जलद
मूरख हृदयँ न चेत, जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम

तपसी धनवंत दरिद्र गृही, कलि कौतुक तात न जात कही
कलियुग जोग न जग्य न ग्याना, एक अधार राम गुन गाना
कलि कर एक पुनीत प्रतापा, मानस पुन्य होहिं नहिं पापा

truth, compassion, penance, charity
प्रगट चारि पद धर्म के, कलि महुँ एक प्रधान
जेन केन बिधि दीन्हें, दान करइ कल्यान
Saint

बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता
संत बिटप सरिता गिरि धरनी, पर हित हेतु सबन्ह क करनी
saint, tree, river, mountain, earth
संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही, चितवहिं राम कृपा करि जेही
उमा संत कइ इहइ बड़ाई, मंद करत जो करइ भलाई
A Saint does good to those who do bad to a saint.
संत असंतन्हि कै असि करनी, जिमि कुठार चंदन आचरनी
साधु अवग्या तुरत भवानी, कर कल्यान अखिल कै हानि

दुखित दोष गुन गनहिं न साधू, रहत न आरत कें चित चेतू

For Women

धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपत काल परिखिअहिं चारी
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा, कायँ बचन मन पति पद प्रेमा
महाबृष्टि चलि फूटि किआरीं, जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारी
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी, तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई, बिधवा होइ पाई तरुनाई
करेहु सदा संकर पद पूजा, नारि धरमु पति देउ न दूजा
दोहा -- दीप सिखा सम जुबति तन, मन जनि होसि पतंग
जो आपन चाहै कल्याना, सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना
सो परनारी लिलार गोसाईं, तजउ चउथ के च्न्द की नाईं
बुधि बल सील सत्य सब मीना, बनसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं, अवगुन आठ सदा उर रहहीं
साहस अनृत चपलता माया, भय अबिबेक असौच अदाया
recklessness, falsity, fickleness, deceit, timidity, indiscretion, impurity and cruelty
सुखनिधान अस पितु गृह मोरें, पिय बिहीन मन भाव न भोरें
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी, कपटी मित्र सूल सम चारी
अनुज बधू भगिनी सुत-नारी, सुनु सठ कन्या सम ए चारी
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना, अंध बधिर क्रोधी अति दीना
ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना, नारि पाव जमपुर दुख नाना

Jealousy

निज कवित केहि लाग न नीका, सरस होउ अथवा अति फीका
जे पर भनिति सुनत हरषाहीं, ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं

brahman

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना, कर बिनु करम करइ बिधि नाना
देह धरे कर यह फलु भाई, भजिअ राम सब काम बिहाई
अन्तकाल कर याद मुझे ही, त्यागेगा शरीर जो देही ।
वह मद्भाव प्राप्त होगा ही, इस में है कछु संशय नाही ॥८.०५॥
जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं, अंत राम कहि आवत नाहीं

Advice

दोहा-- काटेहिं पइ कदरी फरइ, कोटि जतन कोउ सींच

बिनय न मान खगेस सुनु, डाटेहिं पइ नव नीच
नाथ बयरु कीजे ताहीं सों, बुधि बल सकिअ जीति जाही सों
प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं, ऐसे नर निकाय जग अहहीं
बचन परम हित सुनत कठोरे, सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे
हित मत तोहि न लागत कैसें, काल बिबस कहुँ भेषज जैसें
good counsel is not liked by people like a medicine to a person doomed to death.

Selfish world

सुर नर मुनि सब कै यह रीती, स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती
हेतु रहित जग जुग उपकारी, तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी
स्वारथ मीत सकल जग माहीं, सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं
O Lord You and your servants are only two selfless servers in the world,
All others serve their own interest, no one thinks of others spiritual benefit even in dreams.
परहित बस जिन्हके मन माहीं, तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं
परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई
works poetry $ ganga
कीरति भनिति भूति भलि सोई, सुरसरि सम सब कहं हित होई
जिमि सरिता सागर महुं जाहीं, जद्यपि ताहि कामना नाहीं
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएं, धरमसील पहिं जाहिं सुभाएं

friendship

जो न मित्र दुख होहिं दुखारी, तिन्हहि बिलोकत पातक भारी
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा, गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा
foolish servant, kanjoos raja, bad wife , deceitful friend
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी, कपटी मित्र सूल सम चारी
कबि कोबिद गावहिं असि नीति, खल सन कलह न भल नहि प्रीती
प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं, ऐसे नर निकाय जग अहहीं
बचन परम हित सुनत कठोरे, सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे
हित मत तोहि न लागत कैसें, काल बिबस कहुँ भेषज जैसें
good counsel is not liked by people like a medicine to a person doomed to death.
पर उपदेस कुसल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे
many are good at counseling others, few are those who practice themselves

politics/leader

negotiation, gift, force, division
साम दान अरु दंड बिभेदा, नृप उर बसहिं नाथ कह बेदा
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृपु अवसि नरक अधिकारी
दोहा– मुखिआ मुखु सो चाहिए, खान पान कहुँ एक
पालइ पोषइ सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक
जग बौराइ राज पदु पाई, सब तें कठिन राजमदु भाई

प्रीति बिरोध समान सन, करिअ नीति असि आहि
जौं मृगपति बध मेडुकन्हि, भल कि कहइ कोउ ताहि
lion frog
दोहा-- काटेहिं पइ कदरी फरइ, कोटि जतन कोउ सींच
बिनय न मान खगेस सुनु, डाटेहिं पइ नव नीच
नाथ बयरु कीजे ताहीं सों, बुधि बल सकिअ जीति जाही सों
नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं, मुनि मन मोह करइ छन माहीं

miscellaneous

मातु पिता गुर प्रभु कै बानी, बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी
जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई covetousness increases with every gain
मिलइ न जगत सहोदर भ्राता
सो सबु सहिअ जो दैव सहावा
सहसा करि पाछें पछिताहीं
श्रुति कह परम धरम उपकारा,
क्रोधु पाप कर मूल
सब कें प्रिय सेवक यह नीति every master loves his servant
काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ
सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा
अवगुन तजि सब के गुन गहहीं
कहेहू तें कछु दुख घटि होई
भय बिनु होइ न प्रीति
राम काजु कीन्हें बिनु, मोहि कहाँ बिश्राम
भएँ बिधि बिमुख बिमुख सब कोऊ
अरध तजहिं बुध सरबस जाता wise looses half to protect other half
loan and enemy should be completely finished
बैरु प्रीति नहिं दुरइँ दुराएँ cant be hidden
हित अनहित पसु पच्छिउ जाना
का बरषा सब कृषी सुखानें, समय चुकें पुनि का पछितानें

tantric lusty miser fool beggar disgraceful very old
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा, अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा
सदा रोगबस संतत क्रोधी, विष्णु बिमुख श्रुति संत बिरोधी
always sick/angry paap
तनु पोषक निंदक अघ खानी, जीवत सव सम चौदह प्रानी
self indulgent slanderer, very vicious

राम, श्री राम, श्री राम, जय जय राम
राम, श्री राम, श्री राम, जय जय राम